रिकार्ड–यह कौन आज आया सवेरे.....ओमशांति प्रातःक्लास 9.1.67

सवेरे कितने बजे होते हैं?सेवेरे अर्थात कितने बजे आते हैं?(कोई ने कहा तीन बजे कोई ने कहा चार बजे ,कोई ने कहा संगम पर कोई ने कहा बारह बजे) बाबा एक्युरेट पूछते हैं।बारह को तो तुम सवेरा...कह नहीं सकते।12बजकर एक सेकेंड हुआ अथवा एक मिनट हुआ तो ए.एम. अर्थात् सवेरा शुरू हुआ।12बजकर एक मिनिट हुआ तब कहेंगे सवेरा।यह बिल्कुल सवेरे है ना।ड्रामा में इनका पार्ट बिल्कुल एक्युरेट है।सैकिंड की भी देरी नहीं हो सकती है।यह ड्रामा अनादि बना हुआ है।12बजकर एक सैकिंड जब तक नहीं हुआ है तो ए.एम. नहीं कहेंगे।यह बेहद की बात है ना।बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ सवेरे।विलायत वालों का ए.एम.पी.एम. एक्युरेट चलता है।हिंदुस्तानियों की कोई भी बात एक्युरेट नहीं होती है।उनकी बुद्धि फिर भी अच्छी है।वो ना इतना सतोप्रधान बनते हैं ,ना तमोप्रधान बनते हैं।भारतवासी ही 100परसेंट सतोप्रधान ,फिर 100परसेंट तमोप्रधान बनते हैं।तो बाप भी बड़ा एक्युरेट है।सवेरे अर्थात् 12बजकर एक मिनट 1सेकेंड का हिसाब नहीं रखते।सेकेंड पास होने में मालूम भी नहीं पड़ता।अब यह बातें तुम बच्चे ही समझते हो।दुनियां तो बिल्कुल घोर अंधेरे में है।बाप को सभी भक्त याद करते हैं कि हे पतित–पावन आओ।दुःख में सभी याद करते हैं ;परंतु वो है कौन ,कब आते हैं यह कुछ नहीं जानते।तो जानवर मिसल ठहरे ना।जानवरों से भी बदतर हैं। मनुष्य होते हुये भी एक्युरेट कुछ नहीं जानते।इसलिए कहा जाता है बंदर से भी बदतर ;क्योंकि पतित तमोप्रधान हैं।काम भी कितना तमोप्रधान है।बर्थ कन्ट्रोल लिए विलायत में भी रड़ियां मारते रहते हैं।अखबार में पढ़ा था।एक गया विलायत में, लिखा है वहां यूनिवर्सिटी में हॉस्टल में जो रहते हैं जहां जावे वहां देखे लड़की और लड़का आपस में बैठे हैं।यूनिवर्सिटी में भी इतना गंद लगा हुआ है।विकार के लिए कितना बुरा हाल है।फिर वृद्धि होना बंद कैसे होगा?अभी बेहद का बाप आर्डिनेंस निकालते हैं कि जो पवित्र ना बनते हैं तो विनाश को पावेंगे।तुम पवित्र बनने से अविनाशी पद को पावेंगे।तुम राजयोग सीख रहे हो ना।स्लोगन्स में भी लिखते हैं बी होली बी योगी।वास्तव में लिखना चाहिए बी राजयोगी।योगी तो कामन अक्षर है।ब्रह्म से योग लगाते हैं।वो भी योगी ठहरे।बच्चा बाप से ,स्त्री पुरुष से योग लगाती है ;परंतु यह तुम्हारा है राजयोग।बाप राजयोग सिखाते हैं।इसलिए राजयोग अक्षर लिखना ठीक है।देहली में मालविय नगर वालों ने किचेन बनाई है।उसमें लिखा है बी होली, बी योगी।यह रांग है।फिर नया बनाय लिखो बी होली एंड राजयोगी।...दिन प्रतिदिन .....तो होती रहती है।बाप भी कहते हैं आज तुमको गुह्य ते गुह्य अच्छी बातें सुनाता हूँ।अब शिव जयंती भी आने वाली है।शिवजयंती तो तुमको अच्छी रीति मनाना है।कोई ने लिखा था वहां प्लाट पड़ा है।शिवजयंती वहां मनावें?बाबा ने नहीं लिखा था।आज फिर लिख देता हूँ भल मनाओ।हां, लिख देता हूँ।कहेंगे शिवबाबा ने नहीं लिखा फिर अब हां, क्यों?अरे, यह ड्रामा में ऐसे ही नूंध थी ना।ना करना भी ड्रामा में था।हां भी ड्राम में है।शिवजयंती पर तो बहुत अच्छी रीति सर्विस करनी है।जिनके पास भी प्रदर्शनी है सभी अपने2 सेंटर पर अथवा घर में शिव जयंती अच्छी रीति मनाओ और लिख दो शिवबाबा गीताज्ञान दाता बाप से बेहद का वर्सा लेने का आकर सीखो।भल बत्तियां आदि भी जगा दें।फिर2 में होनी चाहिए।तुम ज्ञान गंगाये हो ना।तो हर एक पास गीता पाठशाला होनी चाहिए।घर2 में गीता तो पढ़ते हैं ना।पुरुषों से भी मातायें भक्ति में तीखी होती हैं।ऐसे भी कुटुम्ब होते हैं जहां सभी गीता पढ़ते हैं।तो घर2 में यह चित्र रख देने चाहिए।लिख दें कि बेहद के बाप से आकर फिर से अपना वर्सा लो।तुम सच्ची2 दीवाली मनाते हो ना।.....तो होगा सतयुग में।वहां घर2 में रोशनी ही रोशनी होगी अर्थात् हर आत्मा की ज्योति जगी रहती है।यहां तो अंधेरा है।आत्माओं की बुद्धि जनर मिसल बन पड़ी है।शैतानी अथवा आसुरी बुद्धि बन पड़े हैं।वहां आत्मायें प्योर होने से दैवी बुद्धि रहती हैं।आत्मा ही पतित आत्मा ही पावन बनती है।बाप ही समझाते हैं।अभी तुम्हारी आत्मा पतित आसुरी बन पड़ी है।बर्थ नॉट अ पेनी है।अब तुम पांउड बन रहे हो।आत्मा प्योर होने से फिर शरीर भी प्योर मिलेगा।

यहां आत्मा इम्प्योर है तो शरीर भी इम्प्योर ,दुनियां भी इम्प्योर है।इन बातों को तुम्हारे में भी कोई थोड़े हैं जो यथार्थ रीति समझते हैं और उनके अंदर में खुशी होती है।नम्बरवार पुरुषार्थ तो करते रहते हैं।ग्रहचारी भी होती है।कब राहू की ग्रहचारी बैठती है तो आश्चर्यवत भागन्ती हो जाते हैं।ब्रहस्पति की दशा से बदल कर ठक राहू की दशा बैठ जाती है।काम विकार में गया और राहू की दशा बैठी।मल्लयुद्ध होती है ना।तो माताओं ने देखा नहीं होगा ;क्योंकि मातायें होती हैं घर की घरात्री।तुमको मालूम है भ्रमरी को घरेत्री कहते हैं अर्थात् घर बनाने वाली।घर बनाने का अच्छा कारीगर है।इसलिए घरेत्री नाम है।कितनी मेहनत करती है।वो भी पक्का मिस्त्री है।दो–तीन कमरा बनाती है।तीन–चार को ले आती है।वैसे तुम भी ब्राह्मणियां हो।चाहे एक–दो को बिठाओ ,चाहे 10–12 को ,चाहे 100को ,500 को बिठाओ।मंडप आदि बनाती हो।वो घर बनाया हुआ ना।उनमें बैठ सबको सबको भूं2 करती हो।फिर (कोई) तो समझ कर कीड़े से ब्राह्मण बनते हैं।कोई सड़ा हुआ निकलते हैं अर्थात् इस धर्म का नहीं है।इस धर्म वालों को ही पूरी रीति टच होगा।तुम तो फिर भी मनुष्य हो ना।तुम्हारी ताकत उनसे जास्ती है।तुम दो हजार के बीच भी भाषण कर सकती हो।आगे चलकर चार–पांच हजार की सभा में भी तुम जावेगी।भ्रमरी की तुम्हारे से भेंट है।सन्यासी यह भेंट कर नहीं सकते।वो तो किसी को राजयोग सिखा ही नहीं सकते हैं।विश्व का मालिक तो बाप ही बनाते हैं।गवर्मेंट तो बिल्कुल ही घोर अंधियारे में हैं।साधु–संत आज कितने ढेर हैं।आजकल माइयां भी गुरू कफनी पहन कर जाती हैं।फारेनर्स को ठग कर आती हैं।वो समझते हैं यह भारत का प्राचीन योग है।उनको कहते हैं भारत में चल कर सीखो।तुम ऐसे थोड़े ही कहेंगे कि भारत में चल सीखो।तुम तो फारेन में जावेंगी।वहां ही बैठ तुम समझावेंगी।यह राजयोग सीखो।तो स्वर्ग में तुम्हारा जन्म हो जावेगा।इसमें कपड़े आदि बदलने की बात नहीं है।यहां ही देह के सब सम्बंध भूल अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो।बाप ही लिबरेटर ,गाइड है।सबको दुःख से लिबरेट करते हैं।अभी तुमको सतोप्रधान बनना है।तुम पहले गोल्डन एज में थे।अब आयरन एज में हो।सारा वर्ल्ड ,सब धर्म वाले आयरन एज में हैं।कोई भी धर्म वाले हों उनको कहना है अपने को आत्मा समझो।मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे।फिर मैं साथ ले जाउंगा।बस इतना ही बोलो।जास्ती नहीं... ।यह तो बहुत सहज है।तुम्हारे शास्त्रों में भी है कि घर2 में संदेश दो।कोई एक रह गया तो उसमें उलहना दिया कि मुझे कोई ने बताया ही नहीं।बाप आये हैं तो पूरा (ढिंढोरा) पीटना चाहिए।एक दिन सभी को जरूर पता पड़ेगा बाप आये हैं शांतिधाम, सुखधाम का वर्सा देने।बरोबर जब डीटीज्म था तो और कोई धर्म नहीं था।सभी शांतिधाम में थे।ऐसी2 खयालात चलनी चाहिए।सलोगन बनाने चाहिए।बाप कहते हैं देह सहित दे हके सभी सम्बंधों को छोड़ो।अपने अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो।तो आत्मा प्योर बन जावेगी।अभी आत्मायें इम्प्योर हैं।अभी सबको प्योर बनाकर बाप गाइड (बन) ले जावेंगे।फिर डीटी धर्म वाले नम्बरवार आवेंगे।कितना सहज है।यह तो बुद्धि में धारण होनी चाहिए।जो सर्विस करते हैं वो छुप नहीं सकते।डिससर्विस करने वाले भी छुप नहीं सकते।सर्विसेबुल को तो बुलाते रहते हैं।जो कुछ भी ज्ञान नहीं सुना सकते उनको थोड़े ही बुलावेंगे।वो तो और ही नाम बदनाम कर देंगे।कहेंगे ब्रह्माकुमारियां ऐसी ही होती हैं क्या?पूरा रेस्पांड भी नहीं दे सकतीं तो नाम बदनाम हुआ ना।शिवबाबा का नाम बदनाम करने वाले उंच पद पा नहीं सकते।बर्थ नॉट अ पेनी जाकर बनेंगे।जैसे यहां कोई करोड़पति पदमपति भी है और कोई तो देखो भूख मर रहे हैं।भीख पर शरीर निर्वाह करते रहते हैं।ऐसे2 बेगर्स भी आकर प्रिंस बनते हैं।बेगर वो नहीं जो रोलू रास्ते पर जहां–तहां बैठे रहते हैं।कैसे रोगी ,दुःखी होते हैं।कर्मों की कैसी गंदी भोगना होती है।जनावर को देख दिल खुश होगी।ऐसे गंदे मनुष्यों को देखकर नफरत आती है।कितने डर्टी कर्म किये हैं।बहुत गंदे काम करने से ही ऐसे डर्टी ब्रूट्स ,वैश्यायें, लम्पट, लूले, लंगड़े बन जाते हैं।बड़े2 घर की भी वैश्यायें हैं।तीर्थों पर भी पंडालों

में देखो वैश्यायें बैठी रहती हैं।पंडे लोग भी गंदे होते हैं।बाबा को तो सब बातों का अनुभव है।ऐसे कोई मुश्किल अनुभवी होंगे।गायन भी है गांव का छोरा।अभी इनका यह अंतिम 84वां जन्म गांव का छोरा था ना।बाबा को सब अनुभव है।धंधा भी क्या चलता था।हर इतवार को 5–6आना कमा लेते थे।तो शास्त्रों में जो बातें हैं वो कुछ2 ठीक हैं ;परंतु इसका अर्थ वो समझ नहीं सकते हैं।बाप ही बताते हैं।अब तुम बच्चे जानते हो वो ही श्रीकृष्ण जो स्वर्ग का प्रिंस था वो फिर बेगर बनता है।फिर बेगर टू प्रिंस बनेंगे।बेगर थे ना।अभी करके थोड़ा कमाया।वो भी तुम बच्चों के लिए।नहीं तो तुम्हारी सम्भाल कैसे हो।यह सब बातों शास्त्रों में थोड़े ही है।सब शिवबाबा आकर बताते हैं।बरोबर यह गांव का छोरा था। नाम कोई कृष्ण नहीं था।आत्मा की बात है ना।इसलिए मनुष्य मूंझे हुये हैं।तो बाबा ने समझाया शिवजयंती पर घर2 में चित्रों पर सर्विस करो।लिख दो कि बेहद के बाप से 21जन्मों के लिए स्वर्ग की बादशाही सेकेंड में कैसे मिलती है सो आकर समझो।जैसे दीवाली पर सब मनुष्य दुकानें निकाल कर बैठते हैं।तुमको फिर अविनाशी ज्ञान रत्नों का दुकान निकाल बैठना है।तुम्हारा कितना अच्छा सजाया हुआ दुकान होगा।मनुष्य करते हैं दीवाली पर।तुम फिर शिवजयंती पर करो।जो शिवबाबा सबकी ज्योत जगाते हैं।तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं।वो तो लक्ष्मी से विनाशी धन मांगते हैं और यहां जगत अम्बा से तुमको विश्व की बादशाही मिलती है।यह सब राज बाप समझाते रहते हैं।बाबा कोई शास्त्र थोड़े ही (उच्चारते) हैं।

बाप कहते हैं मैं तो नालेजफुल हूं ना।हां, यह जानते हैं कि फलाने2 बच्चे सर्विस बहुत अच्छी करते हैं।इसलिए याद पड़ते हैं।बाकी ऐसे नहीं कि एक–एक को बैठ जानते हैं।हां, कोई समय पता पड़ जाता है कि यह पतित है।शक पड़ता है।उनकी शकल ही मायूस हो जाती है।तो उपर से बाबा भी कहलाय भेजते हैं कि इनसे पूछो।वो ड्रामा में नूंध है जो कोई2 के लिए बताते हैं।बाकी ऐसे नहीं सबके लिए बतावेंगे।ऐसे तो ढेर हैं काला मुंह करते रहते हैं।जो करेंगे सो अपना ही नुकसान करेंगे।सच्च बताने से कुछ फायदा होगा।ना बताने से और ही अपना नुकसान करेंगे।समझना चाहिए बाबा हमको गोरा बनाने आये हैं और हम फिर काला मुंह करते हैं।इसमें भी बाप जा क्रियेटर है उस पर भी बहुत (रेस्पांसिबिल्टी) है।बच्चा अगर आज्ञाकारी नही तो उसको कुछ देने का नहीं होता है।नहीं तो वो पाप ही करेंगे।उसका दोष उन पर भी आ जावेगा।बाकी कन्या को तो समझाना है।ना माने तो शादी करवा देना पड़े नहीं तो गंदी हो जावेगी।यह है ही कांटों की दुनियां।ह्यूमन कांटे हैं ना।साधु–संत आदि जो भी हैं सब हैं (जंगली)।सतयुग को कहा जाता है गार्डन आफ अल्लाह।और ये है फारेस्ट आफ स्टोन्स।तुम भी बंदर थे ना।शास्त्रों में क्या2 लिख दिया है।कितनी झूठी बातें लिख दी हैं।यह है धर्म की ग्लानी के नावल्स।इसलिए बाप कहते हैं जब2 धर्म की ग्लानी होती हैं तब मैं आता हूँ।यह है महामूर्खों की दुनियां।फर्स्ट नम्बर श्रीकृष्ण देखो, फिर 84जन्मों बाद कैसे महामूर्ख बन जाते हैं।अभी सब हैं तमोप्रधान।आपस में लड़ते–झगड़ते क्या2 करते रहते हैं।यह भी सब ड्रामा में है।फिर स्वर्ग में कुछ भी नहीं होगा।तुम बच्चे जानते हो यह चक्र कैसे फिरता है।कोई विद्वान, आचार्य ,पंडित आदि कुछ भी नहीं जानते है।।प्वाइंट्स तो ढेर की ढेर हैं।नोट करनी चाहिए।जैसे बैरिस्टर लोग भी प्वाइंट्स का बुक रखते हैं ना।डॉक्टर लोग भी किताब रखते हैं।उससे देखकर दवा देते हैं।तो बच्चों को कितनी अच्छी रीति पढ़ना चाहिए।सर्विस करनी चाहिए।बाप ने नम्बरवन मंत्र दिया है मनमनाभव।बाप को याद करो।सर्विस करनी चाहिए।मैडल में भी यह लगा हुआ है।सबको यह महामंत्र दो कि बाप को याद करो।बाप और वर्से को याद करो तो स्वर्ग की बादशाही मिल जावेगी।शिवजयंती मनाते हैं ;परंतु शिवबाबा ने क्या किया?जरूर स्वर्ग वर्सा दिया होगा।योगयुक्त को अच्छी रीति बुद्धि में बैठेगा।योगयुक्त नहीं होते हैं तो पाप रह जाते हैं।इतनी सद्गति नहीं होती है।ज्ञान बहुत है।योग कुछ भी नहीं।नाम–रूप में फंसे रहते हैं।उनकी ही याद रहती है।तो बाप को कैसे याद करेंगे।बाप कहते हैं मुझे याद करो।